लोगोस बाइबल प्रतियोगिता मॉड्यूल: 1

[लोगोस बाइबल अध्ययन सेवकाई]

वेबसाइट: https://logosinhindi.com/
ईमेल: logosinhindi@gmail.com
फ़ोन: 9772420808

विषय- सूची

Chapter 1:व्याख्या विज्ञान (HERMENEUTICS)

Chapter 2:क्रिसमस क्यों मनाया जाता है?

Chapter 3: आत्म साक्षात्कार

Chapter 4:आत्मिक चंगाई – एक प्रमाण

Chapter 1:व्याख्या विज्ञान (HERMENEUTICS)

बाइबल के किसी भी सरल या कठिन पद को समझने के लिए हमें व्याख्या विज्ञान का सहारा लेना चाहिए। व्याख्या विज्ञान के निम्नांकित नियम बाइबल के कठिन पदों की व्याख्या करने मे हमारी मदद करते हैं:

1. बाइबल , बाइबल का व्याख्यान करती है. सम्पूर्ण बाइबल मे सामंजस्य है। बाइबल अपनी ही बात का खंडन नहीं कर सकती। हम जानते है की सम्पूर्ण बाइबल हमें यही कहती है की उद्धार केवल अनुग्रह के द्वारा होता है।

यदि कोई आयत ऐसी आ जाये जो यह कहती सी लगती है की उद्धार बपतिस्मा या किसी और कर्म के द्वारा होता है तो हमें उस आयत को समझने के लिए उसकी शेष सम्पूर्ण बाइबल से तुलना करना चाहिए और सही सन्दर्भ मे मतलब निकलना चाहिए।

2. बाइबल हिंदी या इंग्लिश मे नहीं लिखी गई थी. यह मूलतः इब्री, यूनानी और अरामी भाषा मे लिखी गई थी। इसके व्याख्यान के लिए हमें बाइबल की मूल भाषाओं का सहारा लेना चाहिए। मूल भाषाओं की व्याकरण सही अर्थ निकलने मे मदद करती है।

यदि हमे मूल भाषाओँ का ज्ञान नहीं है तो हमें शब्दकोशों, टीकाओं, अध्ययन बाइबलों, और अन्य उपयोगी पुस्तकों का उपयोग करना चाहिए।

3. बाइबल को समझने के लिए हमें उस समय के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझना ज़रूरी है। यहूदियों के इतिहास, और उनकी संस्कृति को जाने बिना हम इसको ठीक से नहीं समझ पाएंगे।

4. किसी भी आयत की व्याख्या करते समय हमें वर्तमान पाठ के सन्दर्भ को जानना जरुरी हैं। कभी भी एक आयात को अलग से लेकर अर्थ निकलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि उस पुरे पाठ का अध्ययन करना चाहिए।

5. भाषा शैली भी हमें समझनी चाहिए। बाइबल के अधिकतर भाग अक्षरक्षः अर्थ देते हैं, परन्तु कुछ भागों मे मुहावरेदार, आलंकारिक और प्रतीकात्मक शैलियां इस्तेमाल की गई हैं। अगर हम भाषा शैली को नहीं समझेंगे तो अर्थ का अनर्थ कर देंगे।

जब यीशु ने कहा की मेरे मांस को खाये बिना और मेरे लहू को पिए बिना कोई जीवन नहीं पा सकता (यूहन्ना 6:56), तो वो हमें नरभक्षी बनने के लिए नहीं कह रहा था। वो वहां प्रतीकात्मक भाषा में बात कर रहा था।

Chapter 2:क्रिसमस क्यों मनाया जाता है?

क्रिसमस का नाम सुनते ही शायद आपकी आँखों के सामने सांता क्लॉज़, क्रिसमस ट्री आदि की तस्वीर आती होगी और आपके कानों में जिंगल बेल्स कि धुन घुलने लगती होगी, लेकिन ये सब तो मनोरंजन के लिए हैं. आइये मैं आपको क्रिसमस का असली मतलब समझाता हूँ:

क्रिसमस यीशु मसीह के महिमावान जन्म के स्मरण में मनाया जाता है. क्या आपने कभी सोंचा की यीशु मसीह जो की परमेश्वर का बेटा है वो पृथ्वी पर क्यों आया? आपके लिए ये जानना अनंत महत्वपूर्ण है.

परमेश्वर का बेटा यीशु मसीह पृथ्वी पर आपके पापों की क्षमा के लिए सिद्ध (पूरी तरह निष्पाप) जीवन जीने और क्रूस पर मरने आया. अब आप पूछेंगे मेरे पापों की क्षमा के लिए? जी हाँ, आपके पापों की क्षमा के लिए. अब शायद आप पूछेंगे कौनसे पाप ? आइये देखते हैं:

झूठ: यदि आपने झूठ बोला है तो आप झूठे बन गए. (निर्गमन 20 :16 , नीतिवचन 6 :17)

चोरी: शायद आपने किसी बैंक में डाका नहीं डाला हो, लेकिन यदि परीक्षा में नक़ल की है या किसी की कोई भी चीज़ बिना पूछे ले ली हो और अपनी बना ली हो, चाहे वो एक पेंसिल, एक फल या एक रूपया ही क्यों ना हो तो भी वो चोरी हे और आप चोर बन गए हैं . (निर्गमन 20 :15)

रिश्वतखोरी: यदि आपने रिश्वत ली या दी है तो आप रिश्वतखोर बन गए. (निर्गमन 23 :8)

लालच: यदि आपने लालच किया तो आप लालची बन गए. (निर्गमन 20 :17)

ईर्ष्या: यदि आपने किसी से ईर्ष्या की तो आप ईर्ष्यालु बन गए. (1 कुरिन्थियों 3 :3)

घमंड: यदि आपने घमंड किया या डींग हाँकी तो आप घमंडी बन गए. (नीतिवचन 6 :17)

चुगली: यदि आपने किसी की चुगली की तो आप चुगली करने वाले बन गए. (लैवव्यवस्था 19 :16 , याकूब 4 :11 -12)

नशा: यदि आपने नशा किया तो आप व्यसनी बन गए. (1 कुरिन्थियों 6 :10)
माता पिता का अपमान : शायद आपने माता पिता को गाली ना दी हो , उन को सताया ना हो पर फिर भी जाने अनजाने उनका अपमान किया है. इस तरह से आप माता पिता का निरादर करने वाले बन गए. (निर्गमन 20 :12)

हत्या: आपने शायद किसी को बन्दूक या तलवार से नहीं मारा हो, परन्तु बाइबिल कहती है की यदि आपने किसी से नफरत की, कड़वाहट रखी, बैर रखा, मन में क्रोध से भर के गाली दी तो भी आप हत्या कर चुके. (निर्गमन 20 :13 , नीतिवचन 6 :17 , मत्ती 5 :21 -22 , 1 यूहन्ना 3 :15)

व्यभिचार और बलात्कार: आपने शायद किसी का बलात्कार नहीं किया होगा, लेकिन यदि आपने कभी अश्लील वीडियो देखे हैं या किसी आदमी या औरत पर बुरी नज़र डालकर समलैंगिक या विपरीतलिंगी वासना से भर गए हैं तो मन में ही आप व्यभिचार कर चुके ; अपनी आँखों से ही बलात्कार कर चुके. अश्लील वीडियो बनाने और देखने में और भी पाप सलंग्न हैं.

अश्लील वीडियो बनाने वाले मानव तस्करी में लिप्त होतें हैं और स्त्रियों और बच्चों पर ड्रग्स देकर यौन अत्याचार करते हैं. आप मानव तस्करी और यौन अत्याचार के पाप में भी परोक्ष रूप से लिप्त हो गए. (निर्गमन 20 :14 , मत्ती 5 :27 -28 , 1 कुरिन्थियों 6 :10, व्यवस्थाविवरण 22 :25)

सृष्टि उपासना: परमेश्वर के कुछ गुण है. वो एक है, वो आत्मा है, उसकी कोई शुरुआत नहीं और अंत नहीं, वो सृष्टिकार है, उसकी तुलना इस दुनिया में किसी से भी नहीं की जा सकती.. यदि हमने कसी को भी चाहे वो माता पिता, पति, प्रेमी, प्रेमिका, पादरी, संत, पेड़, पहाड़, नदी खलिहान, चाँद- सूरज,

जानवर, मूर्ती चाहे वो यीशु मसीह की ही हो, की उपासना की है तो आप सृष्टि-उपासक बन गए. (निर्गमन 20 :2 -5, रोमियों 1 :23 & 25)

अब आपको ज्ञात हो ही गया होगा की हम मनुष्य कितने पापी हैं. बाइबिल के अनुसार पाप की सजा है नरक में अनंत काल तक तड़पना. नरक एक भयावह जगह है जहाँ से कभी कोई वापस नहीं आ सकता. हम मनुष्यों के पास पापों की क्षमा और नरक से बचने का कोई उपाय नहीं है .

आप शायद अभी यह कहेंगे की हमने अच्छे कर्म भी तो किये हैं, परन्तु बाइबिल के अनुसार *परमेश्वर इतना पवित्र है कि उसके सामने हमारे धार्मिक से धार्मिक और महान से महान कार्य मैले चिथड़े कपड़ों के सामान हैं* (यशायाह 64 :6).

अच्छे कर्म हमे करने चाहिए लेकिन वे परमेश्वर के महान मानकों पर कभी खरे नहीं उतर सकते. आप में से कुछ लोग शायद यह भी सोंच रहे होंगे कि परमेश्वर तो अच्छा है, वो हमे माफ़ कर देगा और अनंत काल तक तड़पने के लिए नरक में नहीं डालेगा. मैं आपको एक उदहारण देता हूँ. यदि कोई हत्यारा या बलात्कारी न्यायाधीश से कहे, “आप तो अच्छे हैं मुझे माफ़ कर दीजिये”, तो क्या न्यायाधीश उसे माफ़ कर देंगे? नहीं.

वो न्यायाधीश कहेंगे, “हाँ मैं अच्छा हूँ; में भ्रष्ट नहीं और इसलिए तुमको फांसी के तख़्त पर चढ़ाने का आदेश दूंगा”. जब धरती का ईमानदार न्यायाधीश किसी को नहीं छोड़ेगा तो क्या आप को लगता है कि स्वर्ग का न्यायाधीश परमेश्वर आपको छोड़ देगा? (भजन संहिता 9 :8) नहीं.

उपर्युक्त उल्लेख से आप जान गए होंगे कि आप धार्मिक रूप से कंगाल हैं और अपने कर्मों के बल पर स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते, परन्तु खुश खबरी यह है कि दया के धनी परमेश्वर ने खुद ही आपके पाप क्षमा करने और आपको स्वर्ग ले जा कर अनंत जीवन देने का इंतज़ाम किया है.

उसने अपने बेटे यीशु मसीह को पृथ्वी पर भेजा ताकि वो आप के पापों को अपने सिर लेले और आपको बचाने के लिए खुद क्रूस पर कुर्बान हो जाये. यीशु मसीह दो हज़ार सत्रह साल पहले चमत्कारिक रूप से

एक कुंवारी स्त्री से पैदा हुआ, अंधों को आँखें दी , कोड़ियों को शुद्ध किया, मुर्दों को जिलाया, पानी पर चला, तूफान को शांत किया, परमेश्वर, नरक, स्वर्ग, दुनिया के अंत आदि के बारे में शिक्षाएं दीं, एक पूरी तरह से सिद्ध जीवन जिया और अपने कहे अनुसार क्रूस पर मरा, गाड़ा गया और अपने कहे अनुसार तीसरे दिन कब्र में से जी उठा , चालीस दिन तक मनुष्यों के बीच में रहा और चालींसवें दिन आसमान में जा कर अद्रश्य हो गया.

अब आपको समझ आ गया होगा की यीशु मसीह क्यों पैदा हुआ. जी हाँ, आप बिल्कुल सही समझे. यीशु मसीह पृथ्वी पर आपके स्थान पर सिद्ध जीवन जीने और सिद्ध बलिदान बनने के लिए आया था ताकि आपको पाप कि गुलामी से आज़ादी मिल सके, आपके पाप क्षमा हो सके और आप अनंत जीवन पा सके.

अब इस महिमावान सुसमाचार के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? विश्वास और पश्चाताप . जी हाँ क्रिसमस मनाने कि सार्थकता इसी में हैं कि आप यीशु मसीह की कुर्बानी के आधार पर अपने पापों कि क्षमा पाएं और उन पर विजय हो जाएँ और शेष जीवन बाइबल कि पवित्र शिक्षाओं पर चलते हुए अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के लिए जीएं क्योंकि:

"परमेशवर ने जगत से (आप से) ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता बेटा यीशु मसीह कुर्बान कर दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वो नरक में अपने पांपों के कारण अनंतकाल तक ना जले पर अनंत जीवन पाए." (यहून्ना 3 :16)

Chapter 3: **आत्म साक्षात्कार**

आप एक अद्‌वितीय मनुष्य हैं।

आप विशेष हैं।

आपके जैसा इस दुनिया में कोई नहीं।

आपके अंदर अच्छाई और महानता भरी पड़ी है।

हर मनुष्य आवश्यक रूप से अच्छा होता है।

आपके अंदर देवत्व वास करता है।

आपको अपने आपको जगाना है।

आप को अपने अंदर ईश्वर को खोजना है।

आपको अपनी महानता को बाहर लाना है।

आप अपने भविष्य के निर्माता हैं।

अपने आप को जानिए।

आप के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

अपने आत्म-सम्मान (self-esteem) को जानिये।

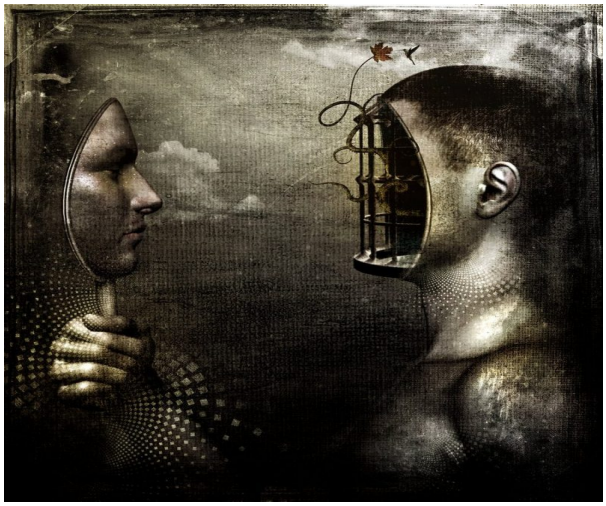

आपने ऐसी बातें सुनी, बोली या पड़ी होंगी। क्या आपने कभी सोचा की ये सच है या नहीं? आइये हम *दुनिया की सबसे प्रसिद्द, सबसे ताकतवर, सबसे ज्यादा जीवनों को बदलने वाली, सदियों से सबसे ज्यादा बिकने वाली और सबसे ज्यादा उपहार में दी जाने वाली किताब बाइबल* में से आत्म-साक्षात्कार करते हैं।

हम झूठे हैँ, क्योंकि हमने झूठ बोला है। (निर्गमन 20:16, नीतिवचन 6:17)

हम चोर हैं। शायद हमने किसी बैंक में डाका नहीं डाला हो, लेकिन यदि परीक्षा में नक़ल की है या किसी की कोई भी चीज़ बिना पूछे ले ली हो और अपनी बना ली हो, चाहे वो एक पेंसिल, एक फल या एक रूपया ही क्यों ना हो तो भी वो चोरी हे और हम चोर हैं । (निर्गमन 20:15)

हम रिश्वतखोर हैं। यदि हमने रिश्वत ली या दी है तो हम रिश्वतखोर हैं।(निर्गमन 23:8)
हम लालची हैं। यदि हमने लालच किया तो हम लालची हैँ। (निर्गमन 20:17)

हम ईर्ष्यालु हैँ। यदि हमने किसी से ईर्ष्या की तो हम ईर्ष्यालु हैँ। (1 कुरिन्थियों 3:3)

हम घमंडी हैँ, क्योंकि हमने कई चीज़ों पर घमंड किया और डींग हाँकी है। (नीतिवचन 6:17)

हम चुगलखोर हैँ। यदि हमने किसी की चुगली की तो हम चुगली करने वाले हैँ। (लैवव्यवस्था 19 :16, याकूब 4:11-12)

हम व्यसनी हैँ। यदि हमने नशा किया तो हम व्यसनी हैँ। (1 कुरिन्थियों 6:10)

हम माता-पिता का अपमान करने वाले हैँ। शायद हमने माता पिता को गाली ना दी हो, उन को सताया ना हो पर फिर भी जाने अनजाने उनका अपमान किया है। इस तरह से हम माता पिता का निरादर करने वाले बन गए। (निर्गमन 20:12)

हम हत्यारे हैँ। हमने शायद किसी को बन्दूक या तलवार से नहीं मारा हो, परन्तु बाइबिल कहती है की यदि हमने किसी से नफरत की, कड़वाहट रखी, बैर रखा, मन में पापमय क्रोध से भर के गाली दी तो भी हम अपने मन में हत्या कर चुके। (निर्गमन 20:13, नीतिवचन 6:17, मत्ती 5:21-22, 1 यूहन्ना 3:15)

हम व्यभिचारी और बलात्कारी हैँ। हमने शायद किसी का बलात्कार नहीं किया होगा, लेकिन चूँकि हमने अश्लील वीडियो या अश्लील विज्ञापन देखे हैं और किसी आदमी या औरत पर बुरी नज़र डालकर समलैंगिक या विपरीतलिंगी वासना से भर गए हैं तो हम मन में ही व्यभिचार कर चुके ; अपनी आँखों से ही बलात्कार कर चुके। अश्लील वीडियो बनाने और देखने में और भी पाप सलंग्न हैं।

अश्लील वीडियो बनाने वाले मानव तस्करी में लिप्त होतें हैं और स्त्रियों और बच्चों पर ड्रग्स देकर यौन अत्याचार करते हैं। हम मानव तस्करी और यौन अत्याचार के पाप में भी परोक्ष रूप से लिप्त हो गए। (निर्गमन 20:14, मत्ती 5:27-28, 1 कुरिन्थियों 6:10, व्यवस्थाविवरण 22:25)

हम सृष्टि उपासक हैँ। परमेश्वर के कुछ गुण है। वो एक है, वो आत्मा है, उसकी कोई शुरुआत नहीं और अंत नहीं, वो सृष्टिकार है, उसकी तुलना इस दुनिया में किसी से भी नहीं की जा सकती।

यदि हमने किसी को भी चाहे वो माता -पिता, पति, प्रेमी, प्रेमिका, पादरी, संत, प्रकृति, जानवर, मूर्ती चाहे वो यीशु मसीह, मरियम या संत पौलुस की ही हो, की उपासना की है तो हम सृष्टि-उपासक बन गए। (निर्गमन 20:2-5, रोमियों 1:23 & 25)

क्या आपको आत्म-साक्षात्कार हुआ? क्या आप जान गए की सब मनुष्य पाप के गुलाम हैँ, नीच हैँ, मूर्ख हैँ। (यदि आपको अब भी लगता है की आप अच्छे मनुष्य हैँ, तो आपको आगे पढ़ने की बिलकुल भी ज़रूरत नहीं हैँ।)

बाइबिल के अनुसार पाप की सजा है नरक में अनंत काल तक तड़पना। नरक एक भयावह जगह है जहाँ से कभी कोई वापस नहीं आ सकता। *हम मनुष्यों के पास पापों की क्षमा और नरक से बचने का कोई उपाय नहीं है ।*

आप शायद अब यह कहेंगे की हमने अच्छे कर्म भी तो किये हैं, परन्तु बाइबिल के अनुसार परमेश्वर इतना पवित्र है कि उसके सामने हमारे धार्मिक से धार्मिक और महान से महान कार्य मैले-चिथड़े कपड़ों के सामान हैं (यशायाह 64:6)। अच्छे कर्म हमे करने चाहिए लेकिन वे परमेश्वर के महान मानकों पर कभी खरे नहीं उतर सकते।

आप में से कुछ लोग शायद यह भी सोंच रहे होंगे कि परमेश्वर तो अच्छा है, वो हमें माफ़ कर देगा और अनंत काल तक तड़पने के लिए नरक में नहीं डालेगा। मैं आपको एक उदहारण देता हूँ।

यदि कोई हत्यारा या बलात्कारी न्यायाधीश से कहे, “आप तो अच्छे हैं मुझे माफ़ कर दीजिये”, तो क्या न्यायाधीश उसे माफ़ कर देंगे? नहीं। वो न्यायाधीश कहेंगे, “हाँ मैं अच्छा हूँ; मैं भ्रष्ट नहीं और इसलिए तुमको फांसी के तख़्त पर चढ़ाने का आदेश दूंगा।”जब धरती का ईमानदार न्यायाधीश किसी को नहीं छोड़ेगा तो क्या आप को लगता है कि स्वर्ग का न्यायाधीश परमेश्वर आपको छोड़ देगा? नहीं (भजन संहिता 9:8)।

उपर्युक्त उल्लेख से आप जान गए होंगे कि हम *सब मनुष्य धार्मिक रूप से कंगाल हैं और अपने कर्मों के बल पर स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते,* परन्तु खुश खबरी यह है कि दया के धनी परमेश्वर ने खुद ही आपके पाप क्षमा करने और आपको स्वर्ग ले जा कर अनंत जीवन देने का इंतज़ाम किया है।

उसने अपने बेटे यीशु मसीह को पृथ्वी पर भेजा ताकि वो आप के पापों को अपने सिर लेले और आपको बचाने के लिए खुद क्रूस पर कुर्बान हो जाये।

यीशु मसीह दो हज़ार उन्नीस साल पहले चामत्कारिक रूप से एक कुंवारी स्त्री से पैदा हुआ, अंधों को आँखें दी, कोड़ियों को शुद्ध किया, मुर्दों को जिलाया, पानी पर चला, तूफान को शांत किया, परमेश्वर, नरक, स्वर्ग, दुनिया के अंत आदि के बारे में शिक्षाएं दीं, एक पूरी तरह से सिद्ध (निष्पाप) जीवन जिया और अपने कहे अनुसार क्रूस पर मरा, गाड़ा गया और अपने कहे अनुसार तीसरे दिन कब्र में से जी उठा , चालीस दिन तक मनुष्यों के बीच में प्रकट होता रहा और चालींसवें दिन आसमान में जा कर अद्रश्य हो गया। वो उसका स्वर्गारोहण था। वो फिर से दुनिया का न्याय करने आने वाला है।

प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर हमारे स्थान पर सिद्ध जीवन जीने और सिद्ध बलिदान बनने के लिए आया था ताकि हमें पाप कि गुलामी से आज़ादी मिल सकें, हमारे पाप क्षमा हो सकें और हम अनंत जीवन पा सकें। अब इस महिमावान सुसमाचार के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? विश्वास और पश्चाताप।

जी हाँ, प्रभु यीशु मसीह की कुर्बानी और वापस जी उठने पर विश्वास करके, अपने पापों से पश्चाताप करके अपने पापों कि क्षमा पाएं और उन पर विजय हो जाएँ और शेष जीवन बाइबल कि पवित्र शिक्षाओं पर चलते हुए अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के लिए जीएं क्योंकि:
“परमेशवर ने जगत से (आप से) ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता बेटा यीशु मसीह कुर्बान कर दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वो नरक में अपने पापों के कारण अनंतकाल तक ना जले पर अनंत जीवन पाए। (यहुन्ना 3:16)”

Chapter 4:**आत्मिक चंगाई – एक प्रमाण**

जितनी भी शारीरिक चंगाईयां थी वो सब *वास्तविक* थी (मति 11ः5) ।
यीशु नें कोड़ी को शुद्ध करके कहा जाओ और अपने आप को याजक को दिखाओ (मति 8ः3-4) ।
जो अन्धा था वो *अंधा नहीं रहा* (लूका 18ः43)।
जो गूंगा था वो *गूंगा नहीं रहा* (मति 12ः22)।
जो अपंग था वो *अपंग ना रहा* (मति 15ः30)।
जो लंगड़ा था वो *लंगड़ा ना रहा* (मति 21ः14)।
जो मरा हुआ था वो *जिंदा हो गया* (लूका 8ः54-55)।
जो बीमार था वो *बीमार ना रहा* (लूका 7ः21)।
जो दुष्ट आत्मा से ग्रसित था वो *अब अपने आपे में आ चुका था* (मरकुस 5ः15)।

यह सभी साक्ष्य हमें यही प्रमाण देते हैं कि जिस किसी को भी यीशु ने चंगा करने के लिए छुआ था **वो वाकई अद्भुत रीति से बदल गया और जैसा पहले था वैसा बिलकुल भी नहीं रहा** ।

क्या यदि कोई प्रभु यीशु के पास आये तो उसमे भी आत्मिक मृत्यु और आत्मिक अंधेपन से ऐसा ही स्पष्ट और आश्चर्यजनक छुटकारा नहीं दिखना चाहिए?

मैं सोच रहा था कि उन दिनों में अगर कोई व्यक्ति किसी अंधे को देखता तो उसके मन में यह विचार जरूर आता होगा कि इसको मसीहा ने अभी तक नहीं छुआ है, क्योंकि **अगर मसीहा ने इसे छुआ होता तो फिर यह अंधा नहीं रहता।**
उसी प्रकार यदि एक व्यक्ति मसीही तो कहलाये पर अभी भी आत्मिक रूप से जिलाये हुए की तरह व्यवहार नहीं कर रहा है, अर्थात **मसीहा के पीछे पवित्रता से अपना क्रूस उठा कर नहीं चल रहा है तो स्पष्ट है कि उसकी मसीहा से मुलाकात (encounter) नहीं हुई और वह अभी भी अपने पापों में मरा हुआ है।**

पवित्रशास्त्र बिलकुल स्पष्ट है। **यदि कोई कहे की उसकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है पर यदि वह अभी भी अन्धकार में चलता है तो वह झूंठा है और उसमे सच्चाई नहीं।** (1 युहन्ना 1ः5-6)

आत्मिक चंगाई उतनी ही स्पष्ट और आश्चर्यजनक है जितनी कि शारीरिक चंगाई, बल्कि उससे भी अधिक। मुझे निश्चय है कि लोगों को **जितना अचम्भा लाज़र को मरने के चार दिन बाद ज़िंदा देख कर हुआ होगा उससे भी ज्यादा अचम्भा शाऊल/पौलुस को मसीही के रूप में देख कर हुआ होगा**। कम से कम उनको तो जिनको देखने की आँखे दी गई हैं।

परमेश्वर जिस किसी को भी बुलाते हैं सच में पूरी तरह से बदल देते हैं।

परन्तु कितने सारे लोग अभी भी अपने पापों में बिना किसी झिझक के जी रहें है और मसीही होने का दावा भी कर रहें है। **परमेश्वर (जो की सर्व सामर्थी और स्वयं जीवन और पुनुरुत्थान है) जब किसी के जीवन में काम करते हैं तो आप यह सोचने की हिम्मत भी कैसे कर सकते हैं कि वो बिना बदले छोड़ देंगे**। *परिवर्तन तो होकर ही रहेगा।*

क्या ऐसा हो सकता है कि परमाणु बॉम्ब गिराया जाए और फिर भी वह जगह वैसी की वैसी ही रहे, सिवाय जरा सी धूल उड़ने के? और कोई अपने बाल बिखेर के आपके पास आए और बोले कि मुझ पर भी एक परमाणु बॉम्ब गिरा था, तो क्या आप विश्वास कर लेंगे? फिर भी कोई अविश्वासी या नामधारी मसीही क्रिस्चन टी-शर्ट पहन कर चर्च में एक्शन सॉन्ग पर डांस कर ले तो आप उसे मसीही घोषित कर देते हैं!

परमेश्वर के वचन हमारी वास्तविक अवस्था दर्शाते हैं और आह्वान करते हैं कि **हम अपने आप को जांचे** (2 कुरूंथियो 13ः5) और अगर कोई बदलाव नहीं पाते हैं तो मतलब साफ है कि *अभी तक मसीह से मिलाप नहीं हुआ है* (1 युहन्ना 2ः4)।

एक आत्मिक रूप से जीवित किया गया व्यक्ति जैसा वह पहले था वैसा बिलकुल भी नहीं रहेगा क्योंकि सम्प्रभु परमेश्वर अपनी दया और अनुग्रह से हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और वफादारी के साथ बोले गये वचन के द्वारा नया जीवन देते हैं (1 पतरस 1:23) और हम एक नयी सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरंथियों 5ः17) एक ऐसा व्यक्ति जो पहले कभी था ही नहीं और आज इस पृथ्वी पर मौजूद है।

मतलब पश्चाताप सम्मत फल लाना ही आपके उद्धार का सबूत है (मति 3ः8, लुका 3:8) और **बदला हुआ जीवन ही बदले हुए हृदय का प्रमाण है (लुका 19: 8-9)**। पौलूस अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाने लगा जिसे पहले वो नाश करना चाहता था (गलातियों 1:23)।

हम जो परमेश्वर से जन्मे हैं और बदला हुआ जीवन रखते हैं, **यह हमारा कर्तव्य है** कि हम *भ्रम में पड़े नकली विश्वासियों को बताये कि वो अभी भी पाप में ही है, और उनकी सारी धार्मिक गतिविधियां व्यर्थ है और वे नरक जा रहें है*। **सच्चा प्रेम यही है कि हम लोगों को उनकी असली आत्मिक अवस्था से अवगत करवाएं और पश्चाताप के लिए पुकारें।**

बाईबल में हम पढ़ते है, बहुत सारे अपने प्रिय लोगों को **यीशु के पास ले कर आये** ताकि वे शारीरिक चंगाई पायें (मरकुस 2ः1-5) और अंद्रियास अपने भाई शिमोन को लाया **ताकि वो आत्मिक चंगाई पाये** (युहन्ना 1ः40-42)।

प्रभु यीशु मसीह इसीलिए आये ताकि **हम आत्मिक जीवन पायें** (युहन्ना 10ः10, 1 युहन्ना 5ः12)। और अब जब हम आत्मिक जीवन पा चुके हैं तो *प्रभु येशु के राजदूत के रूप में इस जीवन के सुसमाचार का प्रचार* अविश्वासी और नकली विश्वासी दोनों के बीच में करें (2 कुरुंथियो 5:20)।